ओ३म्

वैदिक सिद्धान्तावली

(सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित)

सम्पादकद्वय :
सन्दीप आर्य (दर्शनाचार्य)
ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर"

प्रथम संस्करण ३००० प्रतियां
प्रकाशन तिथि : मार्गशीर्ष २०७२ विक्रमी

आर्यवीर प्रकाशन

पुनीत प्लाझा फ्लैट १, प्लॉट १५,
सेक्टर ३०, सानपाड़ा, नवी मुम्बई ४००७०५
दूरभाष : ७७३८२४४१९७, ७६६६९८६८३७,
७७०९५९४९७८
E-mail : 1aryaveer@gmail.com
Web : www.santasa.org

अभ्यास १

ईश्वर

प्र. १) ईश्वर कितने हैं ?

उत्तर : ईश्वर एक है तथा उसी के अनेकों नाम हैं।

प्र. २) ईश्वर का मुख्य नाम एवं उसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है जिसका अर्थ है ईश्वर हम सब जीवों की सब ओर से सतत रक्षा करता है।

प्र. ३) ईश्वर के कुल कितने नाम हैं ?

उत्तर : ईश्वर के अनगिनत नाम हैं।

प्र. ४) ईश्वर के अनेकों नाम किस आधार से हैं ?

उत्तर : ईश्वर के अनेकों नाम उसके असंख्यात गुण, कर्म और स्वभाव के कारण से हैं।

प्र. ५) क्या ईश्वर कभी जन्म लेता है ?

उत्तर : नहीं, ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता, वह अजन्मा है।

प्र. ६) स्तुति, प्रार्थना, उपासना किसकी करनी चाहिए ?

उत्तर : स्तुति, प्रार्थना, उपासना केवल ईश्वर की ही करनी चाहिए।

प्र. ७) ईश्वर से अधिक सामर्थ्यशाली कौन है ?

उत्तर : ईश्वर से अधिक सामर्थ्यशाली और कोई नहीं है, वह सर्वशक्तिमान् है।

प्र. ८) ईश्वर के कुछ प्रसिद्ध नामों का तात्पर्य बताएं ?

उत्तर : सबसे बड़ा होने से ईश्वर ब्रह्म, संसार का रचयिता होने से ब्रह्मा, सर्वत्र व्यापक होने से विष्णु, सबका कल्याणकर्ता होने से शिव, दुष्टों को दण्ड देकर रुलाने से रुद्र, सबका पालन करने से प्रजापति, ऐश्वर्यशाली एवं ऐश्वर्यदाता होने से ईश्वर को इन्द्र कहते हैं।

प्र. ९) ईश्वर के कुछ अप्रसिद्ध नामों का तात्पर्य बताएं ?

उत्तर : ज्ञानस्वरूप होने से ईश्वर अग्नि, चराचर जगत् के धारण-जीवन और प्रलय

करने तथा सबसे अधिक बलवान होने से वायु, दुष्टों को दण्ड देने तथा अव्यक्त एवं परमाणुओं का संयोग वियोग करनेवाला होने से जल, विस्तृत जगत् का विस्तारकर्ता होने से पृथिवी, सब ओर से जगत का प्रकाशक होने से आकाश, ईश्वर का कभी विनाश नहीं होता इसीसे उसका नाम आदित्य, स्वप्रकाशस्वरूप सबके प्रकाश करने इसी प्रकार चराचर जगत के आत्मा होने से सूर्य, स्वयं आनन्दस्वरूप सबको आनन्द देनेवाला ईश्वर चन्द्र है। आप मंगलस्वरूप सबका मंगलकर्ता होने से ईश्वर मंगल, स्वयं बोधस्वरूप सभी जीवों के बोधका कारण ईश्वर बुध है। ईश्वर स्वयं अत्यन्त पवित्र और उसके संग से जीव भी पवित्र हो जाते हैं इससे वह शुक्र है।

प्र. १०) ईश्वर को गणपति, नारायण, राहु, केतु, सरस्वती एवं लक्ष्मी क्यों कहते हैं ?

उत्तर : गिनने योग्य समस्त जड़ों और जीवों का स्वामी होने से ईश्वर गणपति है। जल और जीवों को नारा तथा अयन घर को कहते हैं, अर्थात् जल और जीवों के निवास का स्थान होने से ईश्वर नारायण है। राहु अर्थात् ईश्वर सदा एकान्तस्वरूप याने उसमें कभी कोई पदार्थ घुलता-मिलता नहीं तथा दुष्टों को छोड़ने और अन्यों से छुड़ानेवाला है। केतु अर्थात् सब जगत का निवासस्थान, स्वयं रोगरहित और अन्यों को रोगमुक्त कराता है। सरस्वती अर्थात् ईश्वर में समस्त प्रकार के शब्द अर्थ सम्बन्ध प्रयोग का पूर्ण ज्ञान है और लक्ष्मी अर्थात् ईश्वर सबको आकार-प्रकार दे शक्लें बनाता और चराचर जगत को देखता है।

प्र. ११) क्या ईश्वर के पुल्लिंग के अलावा स्त्रीलिंग एवं नपुंसक लिंग में भी नाम हैं ?

उत्तर : ईश्वर का कोई लिंग नहीं परन्तु उसके नाम तीनों लिंगों में वेदादि शास्त्रों में पाए जाते हैं। जैसे ब्रह्म नाम नपुंसकलिंग ईश्वर पुल्लिंग और देवी स्त्रीलिंग में आता है।

प्र. १२) ईश्वर के गुण कर्म एवं स्वभाव बताएं ?

उत्तर : ईश्वर गुण हैं- अद्वितीय, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वव्यापक, अनादि,

अनन्त आदि। ईश्वर के कर्म- जगत की उत्पत्ति पालन एवं विनाश करना तथा जीवों के कर्मों का फल देना एवं ईश्वर का स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु, अजन्मादि है।

प्र. १३) दुःख कितने प्रकार के और कौन-कौन से होते हैं ?

उत्तर : दुःख तीन प्रकार के होते हैं- १. आधिदैविक, २. आधिभौतिक एवं ३. आध्यात्मिक दुःख।

प्र. १४) आधिदैविक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : जड़ों से प्राप्त होनेवाले दुःख को आधिदैविक दुःख कहते हैं। जैसे अधिक सर्दी-गर्मी-वर्षा, प्राकृतिक आपदाएं जैसे भूकम्प-त्सुनामी-बाढ-अकाल आदि इसी प्रकार भूख-प्यास तथा मन की चंचलता या अशान्ति से होने वाले दुःख भी इसी श्रेणी में आते हैं।

प्र. १५) आधिभौतिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : चेतनों से प्राप्त होनेवाले दुःख को आधिभौतिक दुःख कहते हैं। जैसे अन्य मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, मक्खी-मच्छर, सांप इत्यादि से प्राप्त दुःख।

प्र. १६) आध्यात्मिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : अपने स्वयं के अज्ञान वा गलतियों से प्राप्त दुःखों को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं। जैसे अविद्या जनित राग-द्वेष, अंधविश्वास एवं गलत परम्पराओं से प्राप्त विभिन्न प्रकार के दुःख तथा शारीरिक रोग इत्यादि।

प्र. १७) "सत्यार्थ प्रकाश" नामक ग्रन्थ की रचना किसने की थी ?

उत्तर : "सत्यार्थ प्रकाश" नामक ग्रन्थ की रचना महर्षि दयानन्द ने की थी।

अभ्यास - २

बाल शिक्षा

प्र. १) शिक्षक कितने और कौन-कौन से होते हैं ?

उत्तर : शिक्षक तीन होते हैं- १. माता, २. पिता एवं ३. गुरु।

प्र. २) माता को सबसे उत्तम शिक्षक क्यों कहते हैं ?

उत्तर : नौ माह अपने उदर में निकटतम रखती अधिकतम हित करती माता प्रथम पुरोहित है। सन्तानों के लिए प्रेम एवं हित की भावना उसमें सर्वाधिक होती है, इसलिए सर्वोत्तम शिक्षक है।

प्र. ३) सन्तानों के प्रति माता-पिता के क्या कर्त्तव्य हैं ?

उत्तर : सन्तानों के प्रति माता-पिता के निम्न कर्त्तव्य हैं- १. बालक को शुद्ध उच्चारण सिखलाना, २. सन्तानों को उत्तम गुणों से युक्त करना, ३. छोटे-बड़ों से व्यवहार करना सिखलाना, ४. धर्म की शिक्षा देना आदि।

प्र. ४) क्या भूत-प्रेत वास्तव में होते हैं ?

उत्तर : भूत-प्रेत नहीं होते हैं, उनको मानना अन्धविश्वास है।

प्र. ५) संसार में बहुत से लोग भूत-प्रेत क्यों मानते हैं ?

उत्तर : अविद्या, कुसंस्कार, भय, आशंका, मानसिक रोग, धूर्तों के बहकाने से लोग भूत-प्रेत मानने लग जाते हैं।

प्र. ६) हम मरने के बाद कहाँ जाते हैं ?

उत्तर : मरने के बाद हम पाप-पुण्य का फल भोगने के लिए फिर से जन्म लेते हैं।

प्र. ७) हमें दूसरे जन्म में कौन भेजता है ?

उत्तर : हमें दूसरे जन्म में ईश्वर भेजता है।

प्र. ८) क्या मन्त्र-फूंकने से किसी रोग की चिकित्सा होती है ?

उत्तर : मन्त्र फूंकने से किसी रोग की चिकित्सा नहीं होती है।

प्र. ९) क्या ग्रहों के कारण से हमारे जीवन में सुख-दुःख होते हैं ?

उत्तर : हमारे जीवन में सुख-दुःख ग्रहों के कारण से नहीं होते हैं।

प्र. १०) मंगल, शनि आदि ग्रहों का हमारे कर्मों पर कोई प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर : मंगल, शनि आदि ग्रहों का हमारे कर्मों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्र. ११) जन्म-पत्र में लिखी गई बातें क्या सच होती हैं ?

उत्तर : हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं, इसलिए हमारे भविष्य की बातें कोई नहीं जान सकता, इसीसे जन्म-पत्र की बातें झूठ सिद्ध होती हैं।

प्र. १२) छल-कपट किसे कहते हैं ?

उत्तर : दूसरों की हानि पर ध्यान न देकर केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना छल-कपट कहलाता है।

प्र. १३) विद्यार्थी का मुख्य कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर : माता-पिता और गुरुजनों का सदैव आज्ञाकारी होना तथा अपनी विद्या और शरीर का बल सदा बढ़ाते रहना विद्यार्थी का मुख्य कर्त्तव्य है।

प्र. १४) माता-पिता एवं गुरु हमें दण्ड क्यों देते हैं ?

उत्तर : हमारे जीवन से बुराइयों को हटाने के लिए माता-पिता एवं गुरुजन हमें दण्ड देते हैं।

प्र. १५) दण्ड प्राप्त होने पर क्या विचारना एवं करना चाहिए ?

उत्तर : दण्ड प्राप्त होने पर हमें विचारना चाहिए कि मेरे अपने सुधार के लिए दण्ड दिया गया है। क्रोध न करते हुए सुधरने का प्रयास करना चाहिए।

प्र. १६) सदाचार के तीन उदाहरण दीजिए ?

उत्तर : १. शान्त, मधुर और सत्य बोलना, २. बड़ों को नमस्ते करना, ३. माता, पिता एवं गुरुजनों की सेवा करना।

प्र. १७) माता-पिता एवं गुरुजनों का परम कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर : अपने सन्तानों को विद्या, धर्म, श्रेष्ठ आचरण एवं उत्तम संस्कारों से युक्त करना ही माता-पिता तथा गुरुजनों का परम धर्म है।

अभ्यास - ३

अध्ययन-अध्यापन

प्र. १) किन बातों से मनुष्य सुशोभित होता है ?

उत्तर : विद्या, संस्कार, उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव से मनुष्य सुशोभित होता है।

प्र. २) श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिए क्या आवश्यक है ?

उत्तर : श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिए निम्न बातों का होना आवश्यक है -
(१) विद्या प्राप्ति (२) अभिमान न होना (३) दूसरों का सहयोग।

प्र. ३) अध्यापक कैसे होने चाहिएं ?

उत्तर : अध्यापक पूर्ण विद्वान् व धार्मिक होने चाहिएं।

प्र. ४) वैदिक नियम के अनुसार शिक्षा व्यवस्था कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर : वैदिक नियम के अनुसार शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए- १. विद्यालय नगर से दूर, शान्त, एकान्त स्थान में होने चाहिएं। २. लड़के व लड़कियों के विद्यालय अलग-अलग होने चाहिएं। ३. विद्यार्थी का जीवन तपस्वी, संयमी होना चाहिए। ४. सभी विद्यार्थियों की सुविधाएँ एक समान होनी चाहिएं।

प्र. ५) गायत्री मंत्र कौन सा है ?

उत्तर : ओऽम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्। गायत्री मंत्र निम्न है।

प्र. ६) गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ बताइए।

उत्तर : गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ इस प्रकार है- हे सम्पूर्ण जगत् के निर्माता, शुद्धस्वरुप, सकल दुःख हर्ता, समस्त सुखों को प्रदान करने वाले परमपिता परमेश्वर ! कृपा करके हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग में प्रेरित करें।

प्र. ७) प्रतिदिन स्नान क्यों करना चाहिए ?

उत्तर : स्नान करने से शरीर शुद्ध तथा स्वस्थ रहता है, इसलिए प्रतिदिन स्नान करना चाहिए।

प्र. ८) मन की शुद्धि कैसे होती है ?

उत्तर : मन की शुद्धि सत्य के आचरण से होती है।

प्र. ९) प्राणायाम के क्या लाभ हैं ?

उत्तर : प्राणायाम के निम्न लाभ हैं- १. स्मृति शक्ति में वृद्धि, २. मुक्ति पर्यन्त ज्ञान का बढ़ना, ३. रोग निवृत्ति एवं शारीर बल का बढ़ना, ४. सूक्ष्म बुद्धि की प्राप्ति, ५. एकाग्रता का होना, ६. अन्तःकरण की अशुद्धि का नाश आदि।

प्र. १०) ईश्वर का ध्यान कब करना चाहिए ?

उत्तर : ईश्वर का ध्यान प्रतिदिन प्रातः व सायंकाल करना चाहिए।

प्र. ११) क्या ईश्वर का ध्यान करना आवश्यक है ?

उत्तर : ईश्वर का ध्यान करना अत्यावश्यक है।

प्र. १२) वायु की शुद्धि का क्या उपाय है ?

उत्तर : वायु की शुद्धि के लिए प्रतिदिन हवन करना चाहिए।

प्र. १३) हवन करना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर : हवन करने से अनेक प्राणियों का उपकार, वायु-जल-अन्न की शुद्धि, रोगों का दूर होना इत्यादि अनेक लाभ होते हैं।

प्र. १४) ब्रह्मचर्य के पालन से क्या लाभ हैं ?

उत्तर : ब्रह्मचर्य के पालन से शारीरिक व मानसिक विकास, शुभ गुणों की प्राप्ति, दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ, कुशाग्र बुद्धि की प्राप्ति होती है।

प्र. १५) ब्रह्मचर्य कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है- १. वसु नामक कनिष्ठ ब्रह्मचर्य २४ वर्ष पर्यन्त, २. रुद्र नामक मध्यम ब्रह्मचर्य ४४ वर्ष पर्यन्त और ३. आदित्य नामक उत्तम ब्रह्मचर्य ४८ वर्ष पर्यन्त।

प्र. १६) यम कितने प्रकार के व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : यम पाँच प्रकार के होते हैं- १. अहिंसा, २. सत्य, ३. अस्तेय, ४. ब्रह्मचर्य, ५. अपरिग्रह।

प्र. १७) नियम कितने प्रकार के व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : नियम पाँच प्रकार के होते हैं- १. शौच, २. सन्तोष, ३. तप, ४. स्वाध याय, ५. ईश्वर प्रणिधान।

प्र. १८) आयु, विद्या, यश और बल बढ़ाने के क्या उपाय हैं?

उत्तर : माता-पिता, गुरु, वृद्धजनों की सेवा, आदर और उनकी आज्ञाओं का पालन करने से आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं।

प्र. १६) विद्यार्थी को कौन से कार्य नहीं करने चाहिएं?

उत्तर : विद्यार्थी को निम्न कार्य नहीं करने चाहिएं- १. ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, झूठ बोलना। २. अण्डे, मांस, मछली, शराब, गुटका, धूम्रपानादि अभक्ष्य का सेवन। ३. जुआ खेलना, ४. व्यभिचार आदि में वीर्यनाश करना, ५. आलस्य, प्रमाद एवं ४. दूसरों की हानि करना इत्यादि।

प्र. २०) सम्पूर्ण सुख किसे प्राप्त होता है?

उत्तर : जो व्यक्ति विद्या प्राप्त कर धर्म का आचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त करता है।

प्र. २१) धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर : श्रेष्ठ कर्मों के आचरण को धर्म कहते हैं।

प्र. २२) धर्म का ज्ञान कहाँ से होता है?

उत्तर : धर्म का ज्ञान वेद, ऋषियों के ग्रन्थ, महापुरुषों के आचरण से होता है।

प्र. २३) सत्य-असत्य की परीक्षा किस प्रकार की जाती है?

उत्तर : सत्य वह होता है जो- १. वेद के अनुकूल हो, २. सृष्टि नियम से विपरीत न हो, ३. धार्मिक विद्वानों द्वारा कहा गया हो, ४. आत्मा के अनुकूल हो, ५. प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से जांचा गया हो।

प्र. २४) प्रमाण कितने और कौन से होते हैं?

उत्तर : प्रमाण ८ प्रकार के होते हैं- १. प्रत्यक्ष, २. अनुमान, ३. शब्द, ४. उपमान, ५. ऐतिह्य, ६. अर्थापत्ति, ७. सम्भव और ८. अभाव।

प्र. २५) प्रत्यक्ष प्रमाण किसे कहते हैं?

उत्तर : देखने, सुनने, गन्ध लेने, स्पर्श व स्वाद की अनुभूति से जो वास्तविक ज्ञान होता है, उसे प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

प्र. २६) असम्भव बातों के ५ उदाहरण दीजिए?

उत्तर : असम्भव बातों के ५ उदाहरण निम्न हैं- १. पहाड़ उठाना, २. जड़ मूर्तियों द्वारा दूध पीना, ३. चन्द्रमा के टुकड़े करना, ४. परमेश्वर का अवतार लेना, ५. मनुष्य के सींग होना।

प्र. २७) आत्मा के गुण कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान आत्मा के गुण हैं।

प्र. २८) ६ दर्शन शास्त्रों के नाम बताइए।

उत्तर : ६ दर्शन शास्त्रों के नाम इस प्रकार हैं -

१. योग दर्शन, २. सांख्य दर्शन, ३. वैशेषिक दर्शन, ४. न्याय दर्शन, ५. मीमांसा दर्शन, ६. वेदान्त दर्शन।

प्र. २९) सर्वश्रेष्ठ दान कौन सा है ?

उत्तर : विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ दान है।

प्र. ३०) वेद पढ़ने का अधिकार किसे है ?

उत्तर : सभी मनुष्यों को वेद पढ़ने का अधिकार है।

प्र. ३१) देश की उन्नति के लिए तीन उपाय बताइए।

उत्तर : देश की उन्नति के लिए १. ब्रह्मचर्य, २. विद्या और ३. धर्म का प्रचार आवश्यक है।

अभ्यास - ४

गृहस्थ आश्रम

प्र. १) विवाह करने का अधिकार किसे है ?

उत्तर : धार्मिक, विद्वान् (क्रम से चारों अथवा तीन अथवा दो अथवा कम से कम एक वेद के सांगोपांग अध्येता), सदाचारी और ब्रह्मचारी व्यक्ति को विवाह करने का अधिकार है।

प्र. २) विवाह करने का मुख्य आधार क्या है ?

उत्तर : विवाह करने का मुख्य आधार है- अनुकूल गुण-कर्म-स्वभाव का मेल होना।

प्र. ३) जन्म-कुण्डली के आधार पर विवाह करना क्या उचित नहीं है ?

उत्तर : जन्म-कुण्डली देखकर विवाह करना उचित नहीं है, क्योंकि वधू-वर के भविष्य और परस्पर मेल का जन्म-कुण्डली से कोई सम्बन्ध नहीं है।

प्र. ४) वर्ण व्यवस्था किसे कहते हैं ?

उत्तर : वर्ण व्यवस्था एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें गुण-कर्म-स्वभाव एवं योग्यता के आधार पर समाज को चार विभागों में बांटा जाता है।

प्र. ५) वर्ण कितने होते हैं, उनके नाम बताइए ?

उत्तर : वर्ण चार होते हैं। उनके नाम हैं- १. ब्राह्मण, २. क्षत्रिय, ३. वैश्य और ४. शूद्र।

प्र. ६) द्विज किसे और क्यों कहते हैं ?

उत्तर : चारों वर्णों में से प्रथम तीन वर्णस्थ व्यक्ति को द्विज कहते हैं। द्विज शब्द का शाब्दिक अर्थ है जिसका दूसरी बार जन्म हुआ हो। मातागर्भ से संसार में आना प्रथम जन्म है तो आचार्य के ज्ञानरूपी गर्भ से विद्या-स्नातक होना दूसरा जन्म है।

प्र. ७) मानव समाज के कितने प्रकार के शत्रु होते हैं तथा उन्हें दूर करने का दायित्व किसका है ?

उत्तर : मानव समाज के तीन मुख्य प्रकार के शत्रु हैं- १. अज्ञान, २. अन्याय तथा

३. अभाव। इन्हें दूर करने का दायित्व द्विजों अर्थात् क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों का है।

प्र. ८) क्या वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं मानी जाती है ?

उत्तर : वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं मानी जाती है। उसका आधार गुण-कर्म और स्वभाव है।

प्र. ९) क्या कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है ?

उत्तर : शास्त्रों में ब्राह्मण बनने के लिए कुछ गुण-कर्म निश्चित किए हैं। उन गुण-कर्मों को धारण करने वाला कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है।

प्र. १०) ब्राह्मण बनने के लिए ब्राह्मण परिवार में जन्म लेना आवश्यक है ?

उत्तर : ब्राह्मण बनने के लिए ब्राह्मण परिवार में जन्म लेना आवश्यक नहीं है।

प्र. ११) किन कर्मों को करने से व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है ?

उत्तर : ब्राह्मण बनने के लिए इन कर्मों को करना आवश्यक है- १. पढ़ना व पढ़ाना, २. यज्ञ करना व कराना, ३. धर्म का आचरण करना, ४. वेदों को मानना।

प्र. १२) क्षत्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो व्यक्ति प्रजा की रक्षा और पालन करता है उसे क्षत्रिय कहते हैं।

प्र. १३) वैश्य के कर्म क्या हैं ?

उत्तर : वैश्य के कर्म कृषि, पशुपालन एवं व्यापार आदि हैं।

प्र. १४) शूद्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो व्यक्ति पढ़ाने पर भी नहीं पढ़ सकता उसे शूद्र कहते हैं।

प्र. १५) शूद्र का मुख्य कार्य क्या है ?

उत्तर : शूद्र का मुख्य कार्य सेवा करना है।

प्र. १६) क्या शूद्र की सन्तानें द्विज अर्थात ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य बन सकती हैं ?

उत्तर : शूद्र की सन्तानें द्विज अर्थात ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य बन सकती हैं।

प्र. १७) विवाह कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर : विवाह आठ प्रकार के होते हैं।

प्र. १८) सबसे उत्तम विवाह कौन सा है ?

उत्तर : सबसे उत्तम विवाह ब्राह्म विवाह है ।

प्र. १९) ब्राह्म विवाह किसे कहते हैं ?

उत्तर : पूर्ण विद्वान, धर्मिक, सुशील वर-वधू का परस्पर प्रसन्नता के साथ विवाह होना ब्राह्म विवाह है।

प्र. २०) वाणी की चार विशेषताएं बताइए ?

उत्तर : वाणी की चार विशेषताएं हैं- १. वाणी सुमधुर हो, २. सदैव सत्य बोलना, ३. हितकारी बोलना, ४. प्रिय बोलना।

प्र. २१) निन्दा किसे कहते हैं ?

उत्तर : अच्छे को बुरा कहना और बुरे को अच्छा कहना निन्दा कहलाती है।

प्र. २२) श्राद्ध क्या होता है ?

उत्तर : जीवित माता-पिता, विद्वान्, वृद्धजनों की श्रद्धा से सेवा करने को श्राद्ध कहते हैं।

प्र. २३) तर्पण का क्या अर्थ है ?

उत्तर : जीवित माता-पिता, विद्वान् आदि को अपने सेवा एव व्यवहारादि से प्रसन्न रखना तर्पण है।

प्र. २४) क्या मृत पितरों का श्राद्ध व तर्पण नहीं हो सकता ?

उत्तर : मृत पितरों का श्राद्ध व तर्पण सम्भव नहीं है। ऐसा करना वेद आदि शास्त्रों से विरुद्ध है।

प्र. २५) पंचमहायज्ञ कौन से हैं ?

उत्तर : १. ब्रह्मयज्ञ, २. देवयज्ञ, ३. पितृयज्ञ, ४. बलिवैश्वदेवयज्ञ और ५. अतिथियज्ञ।

प्र. २६) अतिथियज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर : धार्मिक, विद्वान्, सत्य के उपदेशक व्यक्ति की सेवा, सत्कार और सम्मान करना अतिथियज्ञ है।

प्र. २७) पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर : अधर्म के आचरण को पाप कहते हैं।

प्र. २८) अधर्म के आचरण से क्या हानि होती है ?

उत्तर : जैसे जड़ से काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है, वैसे ही अधार्मिक व्यक्ति भी पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

प्र. २९) किसे दान नहीं देना चाहिए ?

उत्तर : तप से रहित, अधार्मिक, अविद्वान् व्यक्ति को दान नहीं देना चाहिए।

प्र. ३०) पाखण्डी के लक्षण क्या हैं ?

उत्तर : जो व्यक्ति धर्म के नाम पर दूसरों को ठगता हो, अपनी प्रशंसा स्वंय करे, अच्छे-बुरे सब लोगों से मित्रता करे, स्वार्थ के लिए दूसरों की हानि करता हो वह पाखण्डी होता है।

प्र. ३१) बुद्धिमान् किसे कहते हैं ?

उत्तर : ईश्वर, वेद एवं आप्तों पर श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति बुद्धिमान् होता है।

अभ्यास – ५

वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम

प्र. १) वानप्रस्थ का अर्थ क्या है ?

उत्तर : एकान्त स्थान में जाकर स्वाध्याय—साधना करना वानप्रस्थ कहलाता है।

प्र. २) वानप्रस्थ लेने का अधिकार किसे है ?

उत्तर : वानप्रस्थ लेने का अधिकार गृहस्थी स्त्री अथवा पुरुष को है।

प्र. ३) वानप्रस्थ कब लिया जाता है ?

उत्तर : परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य पूरे हो जाने पर वानप्रस्थ लिया जाता है।

प्र. ४) वानप्रस्थ के प्रमुख कर्त्तव्य क्या हैं ?

उत्तर : स्वाध्याय करना, पंचमहायज्ञ, धर्म का आचरण और योगाभ्यास करना वानप्रस्थ के प्रमुख कर्त्तव्य हैं।

प्र. ५) वानप्रस्थ के बाद अगला आश्रम कौन सा है ?

उत्तर : वानप्रस्थ के बाद अगला आश्रम संन्यास है।

प्र. ६) संन्यास ग्रहण क्यों किया जाता है ?

उत्तर : ईश्वर को प्राप्त करने तथा औरों को कराने के लिए संन्यास ग्रहण किया जाता है।

प्र. ७) आर्य जगत् के किन्हीं तीन संन्यासियों के नाम बताइए।

उत्तर : आर्य जगत् के प्रसिद्ध तीन संन्यासी ये हैं– १. स्वामी दयानन्द जी सरस्वती, २. स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं ३. स्वामी दर्शनानन्द जी।

प्र. ८) संन्यास ग्रहण करने के लिए सबसे अनिवार्य योग्यता क्या है ?

उत्तर : संन्यास ग्रहण के लिए वैराग्य होना अनिवार्य है।

प्र. ९) संन्यासी का मुख्य कार्य क्या है ?

उत्तर : संन्यासी का मुख्य कार्य सत्योपदेश और राष्ट्र में वेद का प्रचार करना है।

प्र. १०) क्या दण्ड, कमण्डल, काषाय वस्त्र धरण करने वाले को ही संन्यासी कहते है ?

उत्तर : नहीं, दण्ड, कमण्डल, काषाय वस्त्र धरण करने मात्र से कोई संन्यासी नहीं

होता, उसके लिए संन्यासी के कर्म करने आवश्यक हैं।
प्र. ११) समाज में अंधविश्वास क्यों फैलता है ?
उत्तर : योग्य संन्यासी के न होने से समाज में अन्धविश्वास फैलता है ।
प्र. १२) संन्यास ग्रहण करने का अधिकार किसे है ?
उत्तर : संन्यास ग्रहण करने का अधिकार पूर्ण धार्मिक एवं विद्वान् को है।
प्र. १३) भारत में लाखों की संख्या में संन्यासी हैं, फिर भी इतना अन्धविश्वास क्यों है ?
उत्तर : अधिकांश संन्यासी विद्या और वैराग्य से रहित हैं। उनमें अन्धविश्वास को दूर करने की न तो इच्छा है और न सामर्थ्य। अत: अन्धविश्वास, पाखण्ड दिनोदिन फैल रहा है।
प्र. १४) धर्म के लक्षण कितने हैं ?
उत्तर : धर्म के दस लक्षण हैं।
प्र. १५) धर्म के दस लक्षण कौन से हैं ?
उत्तर : १. धैर्य, २. क्षमा, ३. मन को धर्म में लगाना, ४. चोरी न करना, ५. शुद्धि, ६. इन्द्रियों पर नियन्त्रण, ७. बुद्धि बढ़ाना, ८. विद्या, ९. सत्य, १०. क्रोध ा न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं।
प्र. १६) योग्य संन्यासी का परीक्षण कैसे होता है ?
उत्तर : सत्योपदेश, वेद, धर्म का प्रचार करने वाला संन्यासी योग्य संन्यासी कहलाता है।
प्र. १७) योग के कितने और कौन से अंग होते हैं ?
उत्तर : योग के आठ अंग होते हैं– १ यम, २. नियम, ३. आसन, ४. प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. धारणा, ७. ध्यान, ८. समाधि।
प्र. १८) परिव्राजक किसे कहते हैं ?
उत्तर : घूम–घूम कर वेद प्रचार करनेवाले संन्यासी को परिव्राजक कहते हैं।
प्र. १९) वैराग्य का अर्थ क्या होता हैं ?
उत्तर : संसार के विषयों को भोगने की इच्छा का न होना वैराग्य कहलाता है। अर्थात् तीनों एषणाओं (पुत्रैषणा, लोकैषणा तथा वित्तैषणा) का त्याग वैराग्य है।

अभ्यास - ६

राजधर्म

प्र. १) राजधर्म का अर्थ क्या है ?

उत्तर : प्रजा के प्रति राजा के कर्त्तव्य को राजधर्म कहते हैं।

प्र. २) राज्य करने का अधिकार किसे है ?

उत्तर : राज्य करने का अधिकार न्यायप्रिय, वेद को मानने वाले क्षत्रिय को है।

प्र. ३) राज्य के अन्तर्गत कितनी सभाएँ होनी चाहिएं, उनके नाम बताइए ?

उत्तर : राज्य के अन्तर्गत तीन सभाएँ होती हैं। उनके नाम हैं- १. विद्या सभा, २. धर्म सभा, ३. राज सभा।

प्र. ४) तीनों सभाएँ किसके अधीन होती हैं ?

उत्तर : तीनों सभाएँ राजा के अधीन होती हैं।

प्र. ५) क्या राजा स्वतन्त्र होता है ?

उत्तर : राजा तीनों सभाओं के आधीन होता है।

प्र. ६) विद्यासभा के अधिकारी कौन होते हैं ?

उत्तर : वेद के विद्वान् विद्यासभा के अधिकारी होते हैं।

प्र. ७) धर्म सभा में अधिकारी बनने की योग्यता क्या है ?

उत्तर : धर्म सभा का अधिकारी धार्मिक और विद्वान् होना चाहिए।

प्र. ८) राज सभा का अधिकारी कौन बन सकता है ?

उत्तर : धार्मिक व्यक्ति जो दण्डनीति और न्याय की नीति को जानता हो, वह राज सभा का अधिकारी बन सकता है।

प्र. ९) राजा में कौन से गुण होने चाहिए ?

उत्तर : राजा वेद का विद्वान्, शूरवीर, पक्षपात रहित, दुष्टों का नाश करने वाला, श्रेष्ठ पुरुषों का सम्मान करने वाला और प्रजा को सन्तान के समान समझने वाला होना चाहिए।

प्र. १०) धर्म की स्थापना के लिए क्या आवश्यक है ?

उत्तर : धर्म की स्थापना के लिए दण्ड व्यवस्था आवश्यक है।

प्र. ११) किन व्यक्तियों को सभा में नियुक्त नहीं करना चाहिए ?

उत्तर : वेद विद्या से रहित मूर्ख, अधार्मिक व्यक्तियों को सभा में नियुक्त नहीं करना चाहिए।
प्र. १२) राजा को किन बुराइयों से दूर रहना चाहिए ?
उत्तर : राजा को निम्न बुराइयों से दूर रहना चाहिए- १. जुआ खेलना, २. नशा करना, ३. अधर्म, ४. निन्दा, ५. बिना अपराध के दण्ड देना।
प्र. १३) मन्त्री किसे बनाना चाहिए ?
उत्तर : वेद आदि शास्त्रों को जानने वाला, अपने देश में उत्पन्न, उत्तम धार्मिक व्यक्ति को मन्त्री बनाना चाहिए।
प्र. १४) राजदूत में कौन से गुण होने चाहिए ?
उत्तर : राजदूत निर्भीक, कुशल वक्ता, छल-कपट से रहित और विद्वान् होना चाहिए।
प्र. १५) किन व्यक्तियों को युद्ध में नहीं मारना चाहिए ?
उत्तर : अत्यन्त घायल, दुःखी, शस्त्र से रहित, भागने वाला योद्धा, हार स्वीकार करने वाले को युद्ध में नहीं मारना चाहिए।
प्र. १६) उपरोक्त व्यक्तियों के साथ क्या करें ?
उत्तर : उन्हें बन्दी बनाकर जेल में डाल देना चाहिए।
प्र. १७) पराजित शत्रुओं के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
उत्तर : पराजित शत्रुओं को भोजन, वस्त्र व औषधि देनी चाहिए। जिनसे भविष्य में हानि की सम्भावना हो उन्हें जीवन भर कारागार में ही रखना चाहिए तथा उनके परिवार की सुरक्षा करनी चाहिए।
प्र. १८) राजा का परम धर्म क्या है ?
उत्तर : राजा का परम धर्म प्रजा का पालन करना है।
प्र. १९) किन से शत्रुता नहीं करनी चाहिए ?
उत्तर : बुद्धिमान, कुलीन, शूरवीर, धैर्यवान् व्यक्ति से शत्रुता नहीं करनी चाहिए।
प्र. २०) क्या राजनीति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है ?
उत्तर : राजधर्म को ही राजनीति कहते हैं, इसलिए राजनीति धर्म से अलग नहीं है।

अभ्यास - ७

ईश्वर और वेद

प्र. १) नास्तिक किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो व्यक्ति ईश्वर को ठीक से नहीं जानता, नहीं मानता और उसका ध्यान नहीं करता है उसे नास्तिक कहते हैं।

प्र. २) मनुष्य के समस्त दुःखों का कारण क्या है ?

उत्तर : ईश्वर को न मानना ही मनुष्य के समस्त दुःखों का कारण है।

प्र. ३) जड़ और चेतन मे अन्तर बताइए ?

उत्तर : १. जड़ में इच्छा नहीं होती है, चेतन में होती है। २. सुख आदि की अनुभूति जड़ को नही होती है, चेतन को होती है। ३. परिवर्तन सड़ना, गलना जड़ में होता है, चेतन में नहीं। ४. जड़ में ज्ञान नहीं होता है, चेतन में होता है। ५. जड़ में लंबाई, चौडाई, रूप रंग होते हैं, चेतन निराकार होता है।

प्र. ४) जड़ और चेतन के उदाहरण दीजिए ?

उत्तर : जड़ के उदाहरण -पत्थर, लकड़ी, लोहा, अग्नि, वायु, कार, कम्प्यूटर, मोबाइल। चेतन के उदाहरण - आत्मा और परमात्मा।

प्र. ५) क्या ईश्वर सर्वव्यापक है ?

उत्तर : हाँ, ईश्वर सर्वव्यापक है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ पर ईश्वर न हो।

प्र. ६) यदि ईश्वर सब जगह है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता है ?

उत्तर : निराकार होने के कारण ईश्वर दिखाई नही देता है।

प्र. ७) न्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर : कर्मों के अनुसार फल देने को न्याय कहते हैं।

प्र. ८) बुरे कर्मों का फल माफ होता है अथवा नहीं ?

उत्तर : नहीं, बुरे कर्मों का फल माफ नहीं होता है।

प्र. ९) क्या दण्ड से बचने के लिए पूजा, प्रार्थना, यज्ञ करना चाहिए ?

उत्तर : एक बार अपराध कर लेने पर उस कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। यह

ईश्वर का नियम है। अतः दण्ड से बचने के लिए पूजा, प्रार्थना, यज्ञ, करना व्यर्थ है।

प्र. १०) दया किसे कहते हैं ?

उत्तर : दूसरों के दुःखों को दूर करने की इच्छा को दया कहते हैं।

प्र. ११) ईश्वर दयालु है तो हमारे पापों को क्षमा क्यों नहीं करता ?

उत्तर : पाप क्षमा होने से सुधार नहीं होता बल्कि व्यक्ति पहले से और अधिक पाप करने लग जाता है। ईश्वर की इच्छा है कि हमारा सुधार हो । जिससे हम भविष्य में बुरे कर्म न करें । इसलिए ईश्वर हमारे पापों को क्षमा नही करता है।

प्र. १२) सर्वशक्तिमान् शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर : जो अपने किसी भी कार्य को करने में दूसरों की सहायता नही लेता उसे सर्वशक्तिमान् कहते हैं।

प्र. १३) ईश्वर ने संसार क्यों बनाया है ?

उत्तर : ईश्वर ने इस संसार को हमारे सुख, कल्याण, और शान्ति के लिए बनाया है।

प्र. १४) हमें ईश्वर से क्या मांगना चाहिए ?

उत्तर : हमें ईश्वर से विद्या, बल, बुद्धि, शक्ति और समृद्धि मांगना चाहिए।

प्र. १५) क्या प्रार्थना करने से सब चीजें मिल जाती हैं ?

उत्तर : केवल प्रार्थना करने से कुछ प्राप्त नहीं होता। प्रार्थना के साथ पूर्ण पुरुषार्थ करना चाहिए।

प्र. १६) उपासना शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर : उपासना शब्द का अर्थ है मन से शुद्ध होकर ईश्वर के गुणों की अनुभूति करना।

प्र. १७) उपासना करने से क्या लाभ हैं ?

उत्तर : उपासना करने से हमारा आत्मिक बल बढता है, दुःख दूर होते हैं, विद्या, बल, और आनन्द की प्राप्ति होती है।

प्र. १८) ईश्वर निराकार है तो बिना हाथ-पैर के संसार को कैसे बना लेता है ?

उत्तर : जैसे चुम्बक बिना हाथ के लोहे को खींच लेता है, सूर्य की किरणें जिस प्रकार बिना पैर के गति करती हैं, वैसे ईश्वर भी अपने शक्ति सामर्थ्य से बिना हाथ-पैर के ही संसार की रचना कर लेता है।

प्र. १६) क्या ईश्वर अवतार लेता है ?

उत्तर : नहीं, ईश्वर अवतार नहीं लेता है।

प्र. २०) ईश्वर का अवतार मानने में क्या दोष हैं ?

उत्तर : ईश्वर का अवतार मानने में निम्न दोष हैं - १) अवतार लेने से ईश्वर में सर्वज्ञत्व, सर्वव्यापकत्व एवं सर्वशक्तिमत्व आदि गुण नहीं रह जाएंगे। २) सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता ये गुण भी अवतारी ईश्वर में नहीं रह जाएंगे। ३) जन्म लेने से एकदेशी होने के कारण जीवों के कर्मों का द्रष्टा तथा कर्मफलदाता आदि नहीं हो सकता। ४) जन्म लेने से ईश्वर सुख-दुःख, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी एवं क्लेशयुक्त होगा, जोकि ईश्वर के स्वभाव से विपरीत है।

प्र. २१) क्या आत्मा और परमात्मा एक ही हैं ?

उत्तर : आत्मा और परमात्मा एक नहीं है।

प्र. २२) हम अपनी इच्छा से कर्म करते हैं अथवा परमात्मा की ?

उत्तर : हम अपनी इच्छा से ही कर्म करते हैं, परमात्मा की इच्छा से नहीं।

प्र. २३) परमात्मा की इच्छा से कर्म करना मानने में क्या दोष है ?

उत्तर : हम परमात्मा की इच्छा से ही कर्म करना मानेंगे तो संसार में बुराई नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि ईश्वर की इच्छा कभी बुरी नहीं हो सकती है।

प्र. २४) ईश्वर के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर : ईश्वर हमारा पालक, रक्षक, बन्धु, गुरु, आचार्य, स्वामी, राजा और न्यायाधीश है।

प्र. २५) वेद किसे कहते हैं ?

उत्तर : ईश्वर के उपदेश को वेद कहते हैं।

प्र. २६) वेद कितने हैं, उनके नाम बताइए ?

उत्तर : वेद चार हैं- १) ऋग्वेद, २) यजुर्वेद, ३) सामवेद, ४) अथर्ववेद।

प्र. २७) वेद का ज्ञान कब दिया गया था ?

उत्तर : वेद का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में दिया गया था।

प्र. २८) ईश्वर ने वेद का ज्ञान किसे दिया था ?

उत्तर : ईश्वर ने वेद का ज्ञान चार ऋषियों को दिया था।

प्र. २९) हमारा धर्मिक ग्रन्थ कौन सा है ?

उत्तर : हमारा धर्मिक ग्रन्थ वेद है।

प्र. ३०) हमें वेद को ही क्यों मानना चाहिए ?

उत्तर : वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद में सब सत्य बातें हैं, इसलिए वेद को ही मानना चाहिए।

प्र. ३१) वेद किस भाषा में है ?

उत्तर : वेद संस्कृत भाषा में है।

प्र. ३२) क्या वेद ऋषियों ने नहीं लिखे हैं ?

उत्तर : वेद ऋषियों ने नहीं लिखे हैं।

प्र. ३३) उन ऋषियों के नाम बताइए जिन्हें वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ ?

उत्तर : उन ऋषियों के नाम हैं - १) अग्नि, २) वायु, ३) आदित्य, ४) अंगिरा।

प्र. ३४) सामवेद में कितने मन्त्र हैं ?

उत्तर : सामवेद में १८७५ मन्त्र हैं।

प्र. ३५) वेद पढ़नें का अधिकार किसे है ?

उत्तर : सभी मनुष्यों को वेद पढ़ने का अधिकार है।

अभ्यास - ८

सृष्टि विषय

प्र. १) इस संसार को किसने बनाया है ?

उत्तर : इस संसार को ईश्वर ने बनाया है।

प्र. २) ईश्वर संसार को किन पदार्थों से बनाता है ?

उत्तर : ईश्वर संसार को सत्व, रज और तम नामक पदार्थों से बनाता है।

प्र. ३) सत्व, रज और तम का अर्थ क्या है ?

उत्तर : जैसे रोटी बनाने की सामग्री आटा है वैसे ही संसार को बनाने की सामग्री को सत्व, रज और तम कहते हैं। इन तीनों के सम अवस्था का नाम प्रकृति है।

प्र. ४) प्रकृति जड़ है अथवा चेतन ?

उत्तर : प्रकृति जड़ है।

प्र. ५) संसार में सबसे पहले बनने वाला पदार्थ कौन सा है ?

उत्तर : संसार में सबसे पहले बनने वाला पदार्थ महतत्व है, जिसे बुद्धि कहते हैं।

प्र. ६) संसार में सबसे अन्त में बनने वाला पदार्थ कौन सा है ?

उत्तर : संसार में सबसे अन्त में पांच महाभूत बनते हैं।

प्र. ७) पांच महाभूत कौन से हैं ?

उत्तर : पांच महाभूत इस प्रकार है- पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

प्र. ८) क्या संसार अपने आप नहीं बन सकता, क्यों ?

उत्तर : संसार अपने आप नहीं बन सकता, क्योंकि वह जड़ है। जड़ पदार्थ में अपने आप क्रिया नहीं होती।

प्र. ९) क्या मनुष्य आदि के शरीर भी ईश्वर बनाता है ?

उत्तर : मनुष्य, पशु-पक्षी के शरीर ईश्वर ही बनाता है।

प्र. १०) सत्व, रज और तम (प्रकृति) को कौन बनाता है ?

उत्तर : सत्व, रज और तम (प्रकृति) को कोई नहीं बनाता, ये अनादि हैं।

प्र. ११) अनादि किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो कभी उत्पन्न नहीं होता उसे अनादि कहते हैं।

प्र. १२) कितने पदार्थ अनादि हैं ?

उत्तर : ईश्वर, जीव और संसार का मूल कारण प्रकृति (सत्व, रज और तम) ये तीन पदार्थ अनादि हैं।

प्र. १३) प्रकृति-विकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर : अनादि सत्व, रज और तम को प्रकृति कहते हैं तथा इससे उत्पन्न सृष्टि के पदार्थों को विकृति कहते हैं।

प्र. १४) संसार के बनने में कितने कारण होते हैं ?

उत्तर : संसार के बनने में तीन कारण होते हैं।

प्र. १५) वे तीन कारण कौन से हैं ?

उत्तर : वे तीन कारण हैं- १) निमित्तकारण याने बनाने वाला, उदाहरण - हलवाई, २) उपादान कारण याने बनाने की सामग्री, उदाहरण - सूजी, घी, ३) साधारण कारण याने अन्य सहयोगी कारण, उदाहरण - कड़ाही, चूल्हा।

प्र. १६) बीज पहले है अथवा वृक्ष ?

उत्तर : बीज का अर्थ है कारण। कारण हमेशा कार्य से पहले होता है। इसलिए वृक्ष से पहले बीज होता है।

प्र. १७) ईश्वर चाहे किसी को राजा बना दे चाहे किसी को फकीर। क्या यह बात उचित है ?

उत्तर : जैसा हम कर्म करते हैं वैसा ही हमें फल प्राप्त होता है। बिना कर्म के कुछ नहीं मिलता। केवल अपनी इच्छा से ईश्वर किसी को राजा या फकीर नहीं बना सकता।

प्र. १८) क्या ईश्वर से कभी भूल-चूक होती है ?

उत्तर : ईश्वर सर्वज्ञ होने से उससे कभी भूल-चूक नहीं होती।

प्र. १९) किन ग्रन्थों की बातों को नहीं मानना चाहिए ?

उत्तर : अभिमानी, स्वार्थी, अधर्मिक, झूठे लोगों द्वारा बनाए गए ग्रन्थों की बातों को नहीं मानना चाहिए।

प्र. २०) किन ग्रन्थों की बातें माननी चाहिए ?

उत्तर : हमें वेद और ऋषियों द्वारा बनाए गए ग्रन्थों की बातें माननी चाहिए।

प्र. २१) मनुष्य झूठी बातों को क्यों स्वीकार कर लेता है ?

उत्तर : वेद और अन्य सत्य शास्त्रों को न पढ़ने के कारण मनुष्य झूठी बातों को मान लेता है।

प्र. २२) पृथिवी आदि पदार्थ पहले बने अथवा मनुष्य ?

उत्तर : पहले पृथिवी आदि पदार्थ बने और सबसे अन्त में मनुष्य।

प्र. २३) मनुष्य की उत्पत्ति सबसे पहले कहाँ हुई ?

उत्तर : मनुष्य की उत्पत्ति सबसे पहले तिब्बत में हुई।

प्र. २४) हमारे देश का प्राचीन नाम क्या था ?

उत्तर : हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त था।

प्र. २५) आर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : परोपकारी, धार्मिक, ईश्वर को जानने-मानने वाले व्यक्ति को आर्य कहते हैं।

प्र. २६) अनार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : दुष्ट, अधार्मिक, मांसाहारी और दुराचारी व्यक्ति को अनार्य कहते हैं।

प्र. २७) संसार में कितनी प्रकार की योनियाँ हैं ?

उत्तर : संसार में दो प्रकार की योनियाँ हैं। एक मनुष्य जो कर्म एवं भोग उभययोनी है तथा दूसरी मनुष्य से भिन्न भोग योनियां पशु-पक्षी आदि।

प्र. २८) क्या आर्य बाहर से आए थे ?

उत्तर : नहीं, आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं।

प्र. २९) ईश्वर का सच्चा भक्त कौन बन सकता है ?

उत्तर : ईश्वर का सच्चा भक्त आर्य ही बन सकता है।

प्र. ३०) सबसे अच्छा राज्य किसका होता है ?

उत्तर : स्वदेशी राज्य सबसे अच्छा होता है।

प्र. ३१) क्या पृथ्वी को नाग अथवा बैल ने धारण किया है ?

उत्तर : पृथ्वी को नाग अथवा बैल ने नहीं अपितु ईश्वर ने धारण किया है।

प्र. ३२) क्या संसार में अन्य स्थानों पर भी मनुष्य रहते हैं ?

उत्तर : संसार में अन्य स्थानों पर भी मनुष्य रहते हैं।

प्र. ३३) संसार कितने समय तक विद्यमान रहता है ?

उत्तर : संसार ४,३२,००,००,००० वर्षों तक विद्यमान रहता है।

प्र. ३४) उसके बाद संसार का क्या होता है ?

उत्तर : उसके बाद संसार का विनाश अर्थात् प्रलय हो जाता है।

प्र. ३५) प्रलय कितने समय तक रहता है ?

उत्तर : प्रलय भी ४,३२,००,००,००० वर्षों तक रहता है।

प्र. ३६) क्या प्रलय के बाद संसार फिर से उत्पन्न होता है ?

उत्तर : हाँ, प्रलय के बाद संसार फिर से उत्पन्न होता है।

अभ्यास - ६

आध्यात्मिक विषय

प्र. १) अविद्या किसे कहते हैं ?

उत्तर : विपरीत जानने को अविद्या कहते हैं।

प्र. २) अविद्या का कोई उदाहरण दीजिए ?

उत्तर : जड़ को चेतन मानना, ईश्वर को न मानना, अन्धेरे में रस्सी को सांप समझ लेना। ये अविद्या के उदाहरण हैं।

प्र. ३) जन्म का अर्थ क्या है ?

उत्तर : शरीर को धारण करने का नाम जन्म है।

प्र. ४) जन्म किसका होता है ?

उत्तर : जन्म आत्मा का होता है।

प्र. ५) मृत्यु किसे कहते हैं ?

उत्तर : आत्मा के शरीर से अलग होने को मृत्यु कहते हैं।

प्र. ६) जन्म क्यों होता है ?

उत्तर : पाप-पुण्य कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म होता है।

प्र. ७) क्या जन्म-मृत्यु को रोका जा सकता है ?

उत्तर : हाँ, जन्म-मृत्यु को रोका जा सकता है।

प्र. ८) मुक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर : जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूट जाना ही मुक्ति है।

प्र. ९) मुक्ति किसकी होती है ?

उत्तर : मुक्ति आत्मा की होती है।

प्र. १०) मुक्ति में आत्मा कहाँ रहता है ?

उत्तर : मुक्ति में आत्मा ईश्वर में रहता है।

प्र. ११) क्या मुक्ति में आत्मा ईश्वर में मिल जाता है ?

उत्तर : नहीं, मुक्ति में आत्मा ईश्वर में नहीं मिलता है।

प्र. १२) मुक्ति में सुख होता है अथवा दुःख ?

उत्तर : मुक्ति में किसी प्रकार का दुःख नहीं होता है। वहाँ केवल ईश्वर के आनन्द की अनुभूति होती है।
प्र. १३) मुक्ति कैसे प्राप्त होती है ?
उत्तर : सत्य, संयम, विद्या प्राप्ति और धर्माचरण करने से मुक्ति प्राप्त होती है।
प्र. १४) शरीर कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर : शरीर तीन प्रकार के होते हैं - १) स्थूल शरीर, २) सूक्ष्म शरीर, ३) कारण शरीर।
प्र. १५) स्थूल शरीर किन तत्वों से बनता है ?
उत्तर : स्थूल शरीर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर बनता है।
प्र. १६) सूक्ष्म शरीर किसे कहते हैं ?
उत्तर : मन, बुद्धि, सूक्ष्म इन्द्रिय इत्यादि १८ पदार्थों को सूक्ष्म शरीर कहते हैं।
प्र. १७) विद्या प्राप्ति के चार उपाय कौन से हैं ?
उत्तर : श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार विद्या प्राप्ति के ४ उपाय हैं।
प्र. १८) इन चार उपायों को समझाइए ?
उत्तर : श्रवण- ध्यान से सुनना, मनन- सुने हुए पर एकांत में विचार करना, निदिध्यासन- विवेचन करना, साक्षात्कार- सही ज्ञान को प्राप्त कर लेना।
प्र. १९) जन्म एक है अथवा अनेक ?
उत्तर : जन्म अनेक होते हैं।
प्र. २०) पूर्वजन्मों की बातें याद क्यों नहीं रहती हैं ?
उत्तर : आत्मा का ज्ञान और सामर्थ्य कम होने से पूर्वजन्मों की बातें याद नहीं रहती हैं।
प्र. २१) आत्मा एक है, अथवा अनेक ?
उत्तर : आत्माएं अनेक हैं।
प्र. २२) मनुष्य, पशु-पक्षी आदि शरीरों में क्या आत्मा एक समान होती है ?
उत्तर : हाँ, सभी शरीरों में आत्मा एक समान होता है।
प्र. २३) आत्मा को भिन्न-भिन्न शरीर क्यों प्राप्त होते हैं ?
उत्तर : अपने पाप-पुण्य रुपी कर्मों के कारण आत्मा को भिन्न-भिन्न शरीर प्राप्त

होते हैं।
प्र. २४) पशु-पक्षी का शरीर कब मिलता है ?
उत्तर : पशु-पक्षी का शरीर पाप कर्म करने पर मिलता है।
प्र. २५) मुक्ति कितने जन्मों में होती है ?
उत्तर : मुक्ति अनेक जन्मों में होती है।
प्र. २६) स्वर्ग किसे कहते हैं ?
उत्तर : सांसारिक सुख-सुविधाओं के भोगने को स्वर्ग कहते हैं।
प्र. २७) कर्म कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर : कर्म ४ प्रकार के होते हैं- १) पुण्य, २) पाप, ३) मिश्रित तथा ४) निष्काम।
प्र. २८) मिश्रित कर्म किसे कहते हैं ?
उत्तर : जिस कर्म में पुण्य-पाप मिला-जुला रहता है उसे मिश्रित कर्म कहते हैं।
प्र. २६) सकाम कर्म किसे कहते हैं ?
उत्तर : धन, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा को पाने की इच्छा से जो कर्म किए जाते हैं उन्हें सकाम कर्म कहते हैं।
प्र. ३०) निष्काम कर्म क्या होते हैं ?
उत्तर : दूसरों के हित, परोपकार की भावना से जो कर्म किए जाते हैं उन्हें निष्काम कर्म कहते हैं।
प्र. ३१) पुण्य कर्मों के उदाहरण दीजिए ?
उत्तर : पढ़ना-पढ़ाना, इन्द्रियों पर संयम, माता-पिता की सेवा, धर्म का आचरण, परोपकार ये अच्छे कर्म हैं।
प्र. ३२) सभी पापों का मूल क्या है ?
उत्तर : सभी पापों का मूल लोभ है।
प्र. ३३) ब्रह्मा किसे कहते हैं ?
उत्तर : चारों वेदों के विद्वान् को ब्रह्मा कहते हैं।
प्र. ३४) जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ?
उत्तर : जीवन का मुख्य उद्देश्य ईश्वर को प्राप्त करना तथा औरों को कराना है।

अभ्यास - १०

व्यवहार, खान-पान सम्बन्धी

प्र. १) अच्छे व्यवहार का लक्षण क्या है ?
उत्तर : धर्म का आचरण, अच्छें लोगों से मित्रता, पढ़ाई करना, नित्य स्नान और शुद्धि रखना - अच्छे व्यवहार के लक्षण हैं।
प्र. २) हमें किसका अनुकरण करना चाहिए ?
उत्तर : हमें धार्मिक विद्वानों का अनुकरण करना चाहिए।
प्र. ३) अच्छे कर्म का पता कैसे चलता है ?
उत्तर : जिन कर्मों को करने में उत्साह, प्रसन्नता, निर्भयता, सन्तोष, सुख, शान्ति का अनुभव होता हो, वे अच्छे कर्म हैं।
प्र. ४) धर्म का ज्ञान किसे होता है ?
उत्तर : जो व्यक्ति बुराइयों में नहीं फंसा हुआ है, उसे ही धर्म का ज्ञान होता है।
प्र. ५) वेद की निंदा करने वाले को क्या कहते हैं ?
उत्तर : वेद की निंदा करने वाले को नास्तिक कहते हैं।
प्र. ६) कौन सा ग्रन्थ सबसे अधिक प्रामाणिक है ?
उत्तर : सबसे अधिक प्रामाणिक वेद है।
प्र. ७) किन व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए ?
उत्तर : विद्वान, धर्मिक, वृद्ध, माता-पिता व सन्बम्धी।
प्र. ८) किनसे मित्रता नहीं करनी चाहिए ?
उत्तर : नास्तिक, छली-कपटी, झूठे, विश्वासघाती और स्वार्थी व्यक्तियों के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए।
प्र. ९) भोजन कैसा होना चाहिए ?
उत्तर : भोजन सात्विक, शाकाहारी, ऋतु के अनुसार, पौष्टिक, आयु व बल को बढ़ाने वाला होना चाहिए।
प्र. १०) मांसाहार से क्या हानि होती है ?
उत्तर : मांसाहार करने से बुद्धि का विनाश, अल्प आयु, स्वभाव में क्रूरता, अधर्माचरण, पशुओं की हिंसा आदि हानियाँ होती हैं।

प्र. ११) क्या मांसाहारी व्यक्ति पापी होता है ?
उत्तर : मांसाहारी व्यक्ति महापापी होता है।
प्र. १२) क्या मांसाहारी व्यक्ति ईश्वर का भक्त हो सकता है ?
उत्तर : ईश्वर ने वेद में मांस खाने का निषेध किया है। ईश्वर की आज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति कभी भी ईश्वर का भक्त नहीं हो सकता है।
प्र. १३) भोजन का निर्धारण किन ग्रन्थों से होता है ?
उत्तर : भोजन का निर्धारण आयुर्वेद और वेद आदि सत्य शास्त्रों के आधार पर किया जाता है।
प्र. १४) कुछ लोगों का कहना है कि "मांसाहार न करने से पशुओं की संख्या बहुत बढ़ जाएगी" क्या यह उचित है ?
उत्तर : पशु-पक्षियों के जीवन से प्राकृतिक सन्तुलन बना रहता है। मांसाहार के लिए व्यक्ति इनकी संख्या को अप्राकृतिक रूप से बढ़ाते हैं। यदि इन्हें प्राकृतिक जीवन जीने दें तो इनकी संख्या नियन्त्रण में ही रहेगी।
प्र. १५) क्या, एक साथ एक थाली में भोजन करना चाहिए ?
उत्तर : नहीं, एक ही थाली में एक साथ भोजन नहीं करना चाहिए।
प्र. १६) झूठा खाने से क्या हानि होती है ?
उत्तर : दूसरों का झूठा खाने से उनके रोग हमारे शरीर में आ सकते हैं। इसलिए झूठा नहीं खाना चाहिए।
प्र. १७) भोजन करते समय किन बातों का ध्यान रखें ?
उत्तर : भोजन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें - १) एकान्त में भोजन करें। २) भोजन करते समय बातचीत न करें। ३) अन्न बासी न हो। ४) अच्छी तरह खूब चबा कर भोजन करें। ५) खाने के बाद आध घण्टे तक पानी न पिए।
प्र. १८) भोजन कब करना चाहिए ?
उत्तर : प्रातःकाल जागने के ५-६ घण्टे बाद व रात्रि में सोने से २-३ घंटे पूर्व भोजन करना चाहिए।
प्र. १९) भोजन से पूर्व कौन सी प्रार्थना करनी चाहिए ?
उत्तर : "हे ईश्वर आपकी कृपा से मुझे अन्न की प्राप्ति हुई है। अन्न से मुझे उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, बल, मेधा की प्राप्ति हो" ऐसी प्रार्थना भोजन से पूर्व करनी चाहिए।

अभ्यास - ११

महर्षि दयानन्द

प्र. १) स्वामी दयानन्द का जन्म कहां हुआ था ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द का जन्म ग्राम टंकारा, गुजरात राज्य में हुआ था।

प्र. २) स्वामी दयानन्द के जन्म का नाम क्या था ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द के जन्म का नाम मूलशंकर था।

प्र. ३) स्वामी दयानन्द ने संन्यास की दीक्षा किससे ली थी ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द ने संन्यास की दीक्षा स्वामी पूर्णानन्द से ली थी।

प्र. ४) स्वामी दयानन्द के गुरु का नाम क्या था ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द के गुरु का नाम स्वामी विरजानन्द था।

प्र. ५) स्वामी दयानन्द को कितनी बार जहर दिया गया था ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द को सत्रह बार जहर दिया गया था।

प्र. ६) स्वामी दयानन्द को आखरी बार कहां विष दिया गया था ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द को आखरी बार विष जोधपुर में दिया गया था।

प्र. ७) महिलाओं को वेद पढ़ने तथा यज्ञ का अधिकार आधुनिक भारत में किसने दिया ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं को वेद पढ़ने तथा यज्ञ का अधिकार दिया।

प्र. ८) वैदिक सोलह संस्कारों की पुस्तक कौन सी है ?

उत्तर : वैदिक सोलह संस्कारों की पुस्तक संस्कारविधि है।

प्र. ९) सत्यार्थ प्रकाश में कितने समुल्लास हैं ?

उत्तर : सत्यार्थ प्रकाश में चौदह समुल्लास हैं।

प्र. १०) आर्य समाज की स्थापना किसने की ?

उत्तर : आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की।